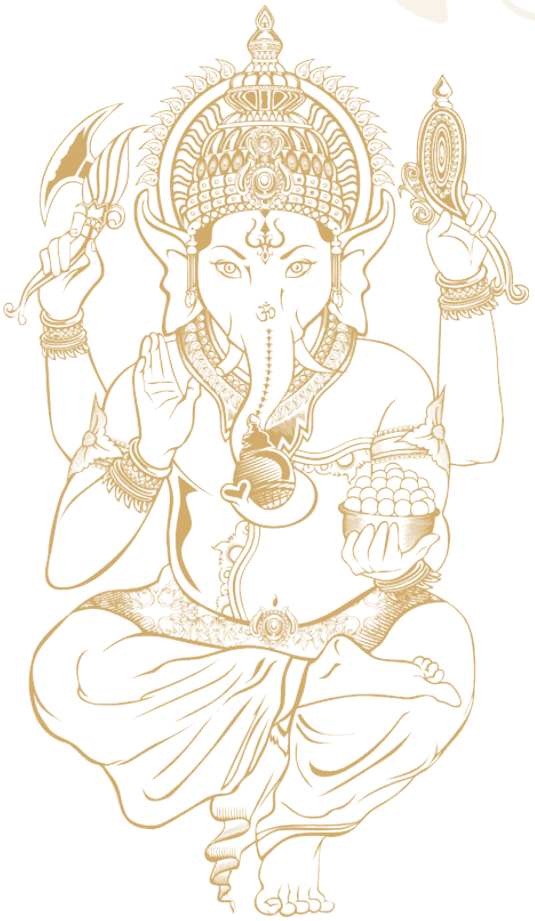

08 Dec 2025

09:13 AM

Rohtak

Model: Baby-Horoscope

Order No: 120485501

तिथि 08/12/2025 **समय** 09:13:00 **वार** सोमवार **स्थान** Rohtak **चित्रपक्षीय अयनांश** : 24:13:14
अक्षांश 28:54:00 उत्तर **रेखांश** 76:38:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** -00:23:28 घंटे

पंचांग

साम्पातिक काल	13:58:10 घं
वेलान्तर	00:08:05 घं
सूर्योदय	07:04:50 घं
सूर्यास्त	17:26:07 घं
चैत्रादि संवत	2082
शक संवत	1947
मास	पौष
पक्ष	कृष्ण
तिथि	4
नक्षत्र	पुष्य
योग	ब्रह्म
करण	बालव

अवकहड़ा चक्र

गण	देव
योनि	मेष
नाड़ी	मध्य
वर्ण	विप्र
वश्य	जलचर
वर्ग	मेष
युँजा	मध्य
हंसक	जल
जन्म नामाक्षर	हू-हुस्नी
पाया(रा.-न.)	लौह-रजत
होरा	गुरु
चौघड़िया	काल

विंशोत्तरी

शनि 14वर्ष 8मा 25दि

शनि

08/12/2025
02/09/2040

	08/12/2025
बुध	16/05/2027
केतु	24/06/2028
शुक्र	25/08/2031
सूर्य	06/08/2032
चन्द्र	07/03/2034
मंगल	16/04/2035
राहु	20/02/2038
गुरु	02/09/2040

योगिनी

धान्या 2वर्ष 3मा 28दि

धान्या

08/12/2025
06/04/2028

	00/00/0000
	08/12/2025
भद्रिका	06/04/2026
उल्का	06/10/2026
सिद्धा	07/05/2027
संकटा	05/01/2028
मंगला	05/02/2028
पिंगला	06/04/2028

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			20:45:39	धनु	पूर्वाषाढ़ा	3	शुक्र	गुरु	---	0:00			
सूर्य			22:04:32	वृश्चि	ज्येष्ठा	2	बुध	सूर्य	मित्र राशि	0.92	अमात्य	पितृ	सम्पत
चंद्र			06:19:32	कर्क	पुष्य	1	शनि	बुध	स्वराशि	1.14	मातृ	मातृ	जन्म
मंगल		अ	00:24:09	धनु	मूल	1	केतु	केतु	मित्र राशि	1.27	कलत्र	भ्रातृ	विपत
बुध			01:28:18	वृश्चि	विशाखा	4	गुरु	राहु	सम राशि	1.02	पुत्र	ज्ञाति	अतिमित्र
गुरु	व		29:47:11	मिथु	पुनर्वसु	3	गुरु	चंद्र	शत्रु राशि	1.45	आत्मा	धन	अतिमित्र
शुक्र			14:58:31	वृश्चि	अनुराधा	4	शनि	गुरु	सम राशि	0.85	भ्रातृ	कलत्र	जन्म
शनि			01:01:37	मीन	पू०भाद्रपद	4	गुरु	मंगल	सम राशि	0.89	ज्ञाति	आयु	अतिमित्र
राहु	व		18:58:18	कुंभ	शतभिषा	4	राहु	चंद्र	मित्र राशि		---	ज्ञान	मित्र
केतु	व		18:58:18	सिंह	पू०फाल्गुनी	2	शुक्र	राहु	शत्रु राशि		---	मोक्ष	क्षेम

लग्न-चलित

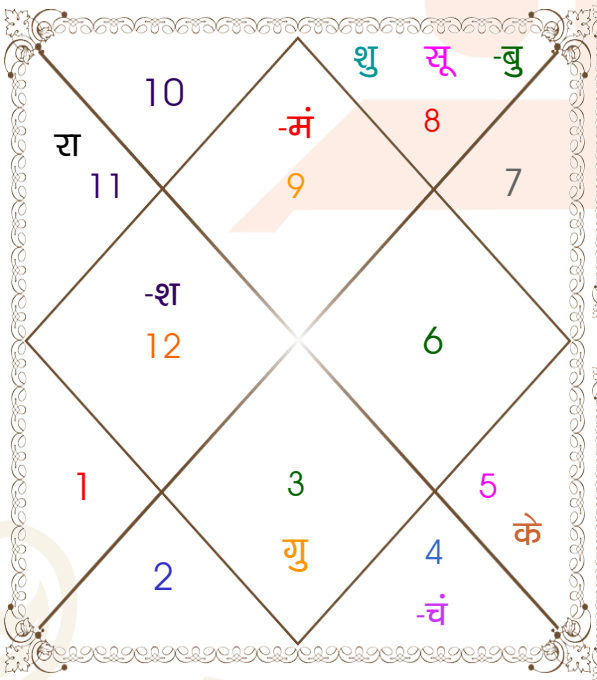

चन्द्र कुंडली

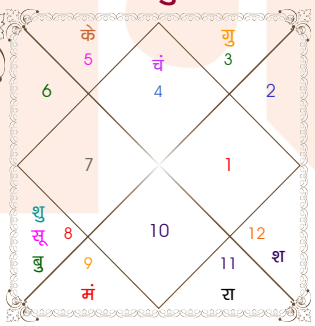

नवमांश कुंडली

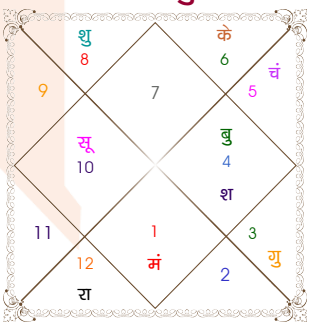

सर्वाष्टकवर्ग

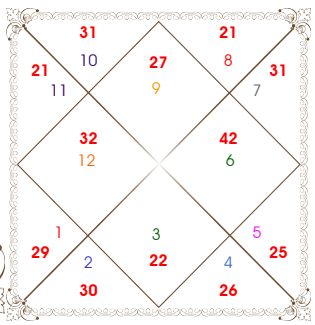

दशमांश कुंडली

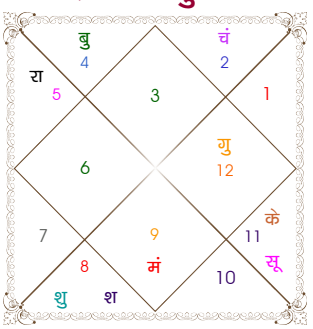

भक्ति शक्ति ज्योतिष केंद्र
पं गोकुल चंद शर्मा
मकान नं-389, सेक्टर 17A, गुरुग्राम, हरियाणा
9312257830

नक्षत्रफल

आप पुष्य नक्षत्र के प्रथम चरण में उत्पन्न हुई हैं। अतः आपकी जन्म राशि कर्क तथा राशि स्वामी चन्द्र होगा। नक्षत्र के अनुसार आपकी योनि मेष, वर्ण विप्र, वर्ग मेष, देव गण तथा मध्य नाड़ी होगी। नक्षत्र के चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रारम्भ "हु" अक्षर से होगा।

आप देवताओं की पूजा द्वारा अर्जित धन से धनयुक्त रहेंगी। आपकी बुद्धि तीक्ष्ण होगी तथा अपने अधिकांश कार्यों को बुद्धिमता से सम्पन्न करेंगी। आपको विविध प्रकार के शास्त्रों का ज्ञान भी रहेगा। साथ ही देखने में भी अति सुन्दर होंगी तथा सभी लोग आपसे स्नेह का भाव रखेंगे इस प्रकार आप सब की प्रिय रहेंगी। आप अपने जीवन में समस्त सुखों के उपभोग करने में सफल रहेंगी। आपकी प्रकृति कफ से युक्त रहेगी।

देवकर्म धनैर्युक्तो बुद्धियुक्तो विचक्षणः।
पुष्ये जायते लोकः शीतश्च सुभगः सुखीः।।
जातक दीपिका

अर्थात् पुष्य नक्षत्र में उत्पन्न जातक देवार्चन से प्राप्त धन से युक्त, बुद्धिमान, कफ प्रकृति तथा सुख से परिपूर्ण होता है।

धार्मिकता की भावना नैसर्गिक रूप से आप में विद्यमान रहेगी तथा ईश्वर में आपकी पूर्ण आस्था रहेगी। आप शान्त चित्त की महिला होंगी तथा हमेशा शान्तचित्त से ही अपने समस्त कार्यों को करेंगी। इसके साथ ही पुत्र धन से भी आप सुशोभित रहेंगी।

देवधर्म धनैर्युक्तः पुत्रयुक्तो विचक्षणः।
पुष्ये जायते लोके शान्तात्मा सुभगः सुखी।।
मानसागरी

अर्थात पुष्य नक्षत्र का पुरुष देवता तथा धर्म को मानने वाला, धन से युक्त, पुत्रयुक्त, विद्वान, शान्त, सुन्दर तथा सुखी होता है।

ब्राहमण तथा देवताओं की आप भक्त होंगी तथा इनके प्रति पूर्ण श्रद्धा तथा सम्मान का भाव रहेगा तथा समयानुसार इनकी पूजा तथा अर्चना करती रहेंगी। धन से आप हमेशा सुसम्पन्न रहेंगी। साथ ही उच्चाधिकार प्राप्त वर्ग आपसे पूर्ण प्रभावित रहेगा तथा इस वर्ग से आपको पूर्ण सम्मान तथा सहयोग की प्राप्ति होगी। आप अपने बन्धुओं से भी युक्त रहेंगी तथा उनसे अच्छे संबंध रखेंगी।

शान्तात्मा सुभगः पण्डितो धनी धर्मसंभृतः पुष्ये।
बृहज्जातकम्

अर्थात पुष्य नक्षत्र का बालक हृदय से शान्त प्रकृति वाला, सर्वप्रिय, सुन्दर, विद्वान

धन से सम्पन्न तथा धर्माचरण में तत्पर रहता है।

शारीरिक दृष्टि से आप हमेशा स्वस्थ तथा प्रसन्न चित्त रहेंगी। माता पिता अथवा सास सुसुर के प्रति आप पूर्ण रूप से अपने कर्तव्य का पालन करेंगी तथा यत्नपूर्वक उनकी सेवा में तत्पर रहेंगी। समाज में लोगों के साथ आपका अत्यन्त ही विनम्रता पूर्वक व्यवहार रहेगा तथा समाज से आपको पूर्ण मान सम्मान तथा आदर की प्राप्ति होगी। इसके अतिरिक्त नाना प्रकार के धन तथा सुखों से आप आजीवन परिपूर्ण रहेंगी।

प्रसन्नगात्रः पितृमातृभक्तः स्वधर्मसक्तो विनयाभियुक्तः।
भवेन्मनुष्यः खलु पुष्यजन्मा सम्माननानाधनवाहनाढ्यः।
जातकाभरणम्

अर्थात पुष्य नक्षत्र में पैदा हुआ मनुष्य स्वस्थ शरीर वाला, माता पिता का भक्त, अपने धर्म में आस्था रखने वाला, नम्र, लोक में मान्य तथा धनवाहन आदि के सुख से परिपूर्ण होता है।

आप जन्म के समय लौहपाद में उत्पन्न हुई हैं। यद्यपि लौहपाद में उत्पन्न जातक सामान्य रूप से रोगी, दुःखी, धनाभाव से व्याकुल, सुखसंसाधनों से हीन तथा अन्य प्रकार के कष्टों से युक्त रहता हैं। परन्तु आपकी जन्म कुण्डली में चन्द्रमा की स्थिति अत्यन्त ही शुभ राशि में है। अतः आपको अशुभ फलों की अपेक्षा शुभ फलों की ही प्राप्ति अधिक मात्रा में होगी आप एक तेजस्वी तथा बुद्धिमती महिला होंगी तथा धन सम्पत्ति से सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगी। आपकी आयु पूर्ण आयु रहेगी तथा जीवन में समस्त सुखसंसाधनों को अर्जित करने में आप यत्न पूर्वक सफल रहेंगी। साथ ही आनन्द पूर्वक इसका उपभोग करेंगी। लेकिन स्वास्थ्य से आप मध्यम रहेंगी एवं समय समय पर श्वास कफादि रोगों से व्याकुलता की अनुभूति करेंगी। कुल मिलाकर आपका सामान्य जीवन प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होगा।

कर्क राशि में उत्पन्न होने के कारण आप का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। आप अपने समस्त कार्यों को निपुणता से सम्पन्न करेंगी तथा आजीवन धन से परिपूर्ण होकर धनवान कहलाएंगी। आप नैसर्गिक रूप से पराक्रमी होंगी तथा धार्मिकता की भावना से भी युक्त रहेंगी। आप पूर्ण श्रद्धा के साथ धर्म का पालन करेंगी। गुरूजनों की आप हमेशा स्नेहपात्र रहेंगी तथा उनका आर्शीवाद आपके साथ रहेगा। आप तीव्र बुद्धि की स्वामिनी होंगी तथा आपकी बुद्धि से सभी लोग प्रभावित रहेंगे। कभी कभी आपको क्रोध अधिक मात्रा में आएगा तथा दुःख की भी आप अनुभूति करेंगी। आपके सभी मित्र अच्छे तथा सद्गुणों से युक्त होंगे। आप एक से अधिक कार्यों अथवा कलाओं के जानने में समर्थ होंगी बल आप में सामान्य रूप से रहेगा। आप घर से दूर अन्यत्र स्थाई या अस्थाई रूप से निवास करेंगी।

कार्यकारी धनीशूरो धर्मिष्ठो गुरुवत्सलः।
शिरो रोगी महाबुद्धिः कृशाङ्गः कृत्यवित्तमः।।
प्रवासशीलः कोपाढ्योडबलो दुःखी सुमित्रकः।
अनासक्तो गृहे वकः कर्कराशौ भवेन्नरः।।

मानसागरी

आपकी प्रकृति वात तथा कफ मिश्रित रहेगी तथा आपका सौन्दर्य अत्यन्ताकर्षक तथा रूप तेज तथा ओज से परिपूर्ण होगा। आप स्वयं अपनी बुद्धि तथा परिश्रम से अर्जित विपुल धन की स्वामिनी बनकर धनाढ्य कहलाएंगी। ब्राहमणों तथा देवताओं के प्रति आपकी पूर्ण श्रद्धा रहेगी तथा समय समय पर आप इनका हार्दिक सत्कार तथा श्रद्धापूर्वक पूजार्चन सम्पन्न करेंगी। उत्तम कुल में उत्पन्न लोगों के प्रति आपके मन में उचित आदर तथा सम्मान का भाव रहेगा तथा इनकी सेवा एवं सहयोग करना आप अपना कर्तव्य समझेंगी।

पवनकफशरीरो देव संकाश रूपः।
स्वयमुपचित्तवित्तो देवताविप्रभक्तः।।
कुलजन परिसेवी मण्डलाकार मध्ये।
भवति विपुलवित्तः कर्कटौ यस्यराशिः।।

जातक दीपिका

आप वेदादिशास्त्रों का अध्ययन करके ज्ञान प्राप्त करेंगी। आप एक या एक से अधिक कार्यों तथा कलाओं में निपुण होंगी। आप मध्यम बली तथा सदाचारी रहेंगी। पुष्पों की सुगन्ध तथा जलक्रीड़ा की आप अत्यन्त शौकीन रहेंगी तथा समाज में पूर्ण रूप से यश प्राप्त करेंगी।

श्रुतकलाबलनिर्मलवृतयः कुसुमगंध जलाशयकेलयः।
किल नरास्तु कुलीरगते विधौ वसुमतीसुमती स्मितलब्धयः।

जातकाभरणम्

आपके गले का भाग स्थूल रहेगा तथा पुरूष वर्ग को आप पूर्ण रूप से अपने वश में करने में सफलता प्राप्त करेंगी। जल विहार करने में आपको आनन्द की प्राप्ति होगी आप बहुत से मित्रों की मित्र होंगी। साथ ही आप के द्वारा बहुत से भवनों का भी निर्माण किया जाएगा अथवा आप स्वयं बहुत से मकानों की स्वामिनी हो सकती हैं। आपका कद सामान्य रहेगा तथा आप टेढ़ी चाल से शीघ्र चलने वाली होंगी। साथ ही आपके पुत्रों की संख्या भी अल्प ही होगी।

स्त्रीनिर्जितः पीनगलः सन्मित्रो वहवालयास्तुकटि्र्धनाढ्यः।
ह्रस्वश्च वक्रो द्रुतगः कुलीरे मेधान्वितस्तोयरतोऽल्प पुत्रः।।

फल दीपिका

आप जीवन में विभिन्न प्रकार की सम्पत्तियों तथा द्रव्यों का स्वामित्व प्राप्त करेंगी। ज्योतिष शास्त्र के विषय में आपको ज्ञान रहेगा। आपका सम्पूर्ण जीवन चन्द्रमा की कलाओं के समान क्षयवृद्धि को प्राप्त होगा अर्थात् उतार चढ़ाव आते रहेंगे। आप केवल स्नेह से ही वश में हो सकती हैं। बलपूर्वक आपसे कोई कार्य नहीं करवाया जा सकता। आप अपने मित्रों को पूर्ण आदर तथा सम्मान देने वाली होंगी। साथ ही जीव पालन, बाग बगीचे, उद्यान या जलाशय इत्यादि के निर्माण में आपकी गहरी रूचि रहेगी।

आवक्रद्रुतगः समुन्नतकटिः स्त्रीनिर्जितः सत्सुहृद्।
देवज्ञा प्रचुरालयः क्षयधनैः सयुंज्यतेः चन्द्रवत्।।
ह्रस्वः पीनगलः समेति च वशं साम्ना सुहृदवत्सलः।
तोयोद्यानरतः स्ववेश्मसहितै जातः शशाळङकैः नरः।।
बृहज्जातकम्

आप सौभाग्यवती होकर स्वनिर्मित गृह में निवास करेंगी तथा जो भी कार्य करेंगी उसे धैर्यपूर्वक सम्पन्न करेंगी। अपने अधिकांश समय को आप भ्रमण तथा यात्रा में व्यतीत करेंगी तथा विनयशीलता के गुण से आप नैसर्गिक रूप से सुसम्पन्न रहेंगी तथा कामवासना के प्रति भी आपका पूर्ण आकर्षण रहेगा। कृतज्ञता के सद्गुण से आप सुशोभित रहेंगी। आप राज्य में किसी उच्च अधिकार प्राप्त पद को अलंकृत करने की भी क्षमता रखेंगी। सत्य का आप हमेशा पालन करेंगी तथा यत्नपूर्वक सत्य तथा प्रिय भाषण ही करेंगी।

युक्तः सौभाग्ययोग्यैगृह सुहृदरटन ज्यौतिषज्ञान शीलैः।
कामासक्तकृतज्ञः क्षितीपतिसचिवः सत्प्रमाण प्रवासी।।
सोन्मादः केशकल्पो जलकुसुमरुचि र्हानिवृद्धयानुयातः।
प्रासादोद्यानवाणीप्रियकरणरतः पीनकण्ठः कुलीरे।।
सारावली

देव गण में उत्पन्न होने के कारण आपकी वाणी उत्तम तथा सबको प्रिय लगने वाली होगी जिससे सभी लोग आपसे प्रभावित रहेंगे। आप सरल बुद्धि की स्वामिनी होंगी तथा सादगी से विचार प्रकट करना तथा अन्य के विचारों को ग्रहण करने में अत्यन्त चतुर होंगी। आप शुद्ध तथा अल्प सात्विक भोजन लेना पसन्द करेंगी। गुणों की आप ज्ञाता होंगी तथा स्वयं महान विभूतियों द्वारा वर्णित गुणों से युक्त रहेंगी। साथ ही धन ऐश्वर्य से आप आजीवन परिपूर्ण रहेंगी। किसी भी प्रकार का आपको अभाव महसूस नहीं होगा।

आपका शरीर सुन्दर तथा सौन्दर्यमय होगा। दानशीलता की प्रवृति का आप प्रदर्शन करती रहेंगी जिससे समाज में आपकी प्रतिष्ठा की वृद्धि होगी। आप सादगी पसन्द होंगी तथा भौतिकता तथा दिखावटीपन से दूर ही रहेंगी। साथ ही समाज में एक विदुषी की तरह आपका सम्मान किया जाएगा।

सुस्वरः सरलोक्तमतिः स्यादल्पभोजन करो हि नरश्च।
जायते सुरगणे डणज्ञः सुज्ञवर्णितगुणो द्रविणाढ्यः।।
जातकाभरणम्

अर्थात देवगण का जातक अच्छी वाणी वाला, सरल बद्धि से युक्त, अल्प मात्रा में भोजन करने वाला, अन्य जनों के गुणों का ज्ञाता, महान विद्वानों द्वारा वर्णित गुणों से युक्त तथा वैभवशाली होता है।

आप मेष योनि में उत्पन्न हुई हैं। अतः प्रारम्भ से ही आप परम उत्साही रहेंगी।

इसी उत्साह से जीवन में खूब उन्नति करेंगी। आप वीरता के गुण तथा युद्ध विद्या में निपुण हो सकती हैं। धन, वैभव तथा ऐश्वर्य से आप हमेशा युक्त रहेंगी। आप समस्त भौतिक सुखों का आजीवन उपभोग करेंगी। आप परोपकार की भावना से सुशोभित रहेंगी तथा अन्य जनों की भलाई करने के लिए तन मन धन से हमेशा तत्पर रहेंगी।

महोत्साही महायोद्धा विक्रमीविभवेश्वरः।
नित्य परोपकारी च मेषयोनौ भवेन्नरः।
मानसागरी

अर्थात मेषयोनि का जातक अतिउत्साही, महायोद्धा, पराक्रमी, ऐश्वर्यवान तथा परोपकारी होता है।

आपके जन्म काल में चन्द्रमा की स्थिति अष्टम भाव में स्थित है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य सामान्य रूप से अच्छा रहेगा फिर भी यदा कदा शारीरिक रूप से परेशानी उत्पन्न होती रहेगी। आपके प्रति उनके मन में स्नेह का भाव रहेगा एवं धन सम्पत्ति का भी उनके पास अभाव नहीं रहेगा। साथ ही जीवन में आपको सर्वप्रकार से वे आर्थिक तथा अन्य रूप से पूर्ण सहायता तथा सहयोग प्रदान करती रहेंगी। साथ ही उनके द्वारा आपको विशेष धन की प्राप्ति भी हो सकती है।

आप का भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा भाव रहेगा एवं उनका कहना मानने के लिए नित्य तत्पर रहेंगी। उनकी सेवा करना तथा वांछित सहयोग प्रदान करना आप अपना नैतिक कर्तव्य समझेंगी। आप के मध्य कभी कभी सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे आपसी संबंधों में तनाव उत्पन्न होगा फिर भी आपसी संबंध सामान्य ही समझें जाएंगे।

आपके जन्म समय में सूर्य द्वादश भाव में स्थित है अतः आपके पिता का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं समय समय पर वे शारीरिक रूप से अस्वस्थता की अनुभूति करेंगे। आपके प्रति उनके मन में स्नेह का भाव रहेगा एवं जीवन में हमेशा शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपकी सहायता करते रहेंगे। साथ ही उनकी प्रवृति पुण्य एवं दान संबंधी कार्यों को करने की रहेगी अतः आपको भी वे पुण्य कार्यों की ओर प्रेरित करेंगे। साथ ही धन सम्पत्ति से भी वे युक्त रहेंगे।

आपकी भी उनके प्रति पूर्ण आदर की भावना रहेगी एवं उनकी आज्ञा का पालन करने के लिए भी आप तत्पर रहेंगी। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों से संबंधों में कटुता या तनाव उत्पन्न होगा परन्तु कुछ समय के बाद स्वतः ही सब कुछ ठीक हो जाएगा। जीवन में आप उनके सुख दुःख का भी ध्यान रखेंगी एवं समयानुसार उनको पूर्ण सहयोग तथा सहायता भी प्रदान करेंगी एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार से कोई कष्ट नहीं होने देंगी।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति प्रथम भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक व्याकुलता से वे पीड़ित रहेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह का भाव भी विद्यमान रहेगा। धन धान्य से वे युक्त रहेंगे तथा जीवन

में समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही अन्य प्रकार से समय समय पर आपको आर्थिक सहयोग भी प्रदान करेंगे।

आपके हृदय में भी उनके प्रति स्नेह एवं सम्मान की भावना विद्यमान रहेगी। आपके संबंध प्रायः मधुर ही होंगे लेकिन यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण अल्प समय के लिए संबंधों में कटुता या तनाव भी उत्पन्न होंगे परन्तु कुछ समय के बाद सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा। आप एक दूसरे से प्रायः सहमत रहेंगे एवं विश्वास भी करेंगे। इसके साथ ही आप भी हमेशा सुख दुःख में यथाशक्ति उनकी सहायता करने के लिए तत्पर रहेंगी एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार की कष्टानुभूति नहीं होने देंगी।

आपके लिए पौष मास, द्वितीया, सप्तमी तथा द्वादशी तिथियाँ शुक्ल तथा कृष्ण पक्ष दोनों की, अनुराधा नक्षत्र, व्याघात योग, नागकरण, बुधवार, तृतीय प्रहर तथा मीन राशिस्थ चन्द्रमा अनिष्ट फलदायक हैं। अतः आप 15 दिसम्बर से 14 जनवरी के मध्य 2,7,12 तिथियों, अनुराधा नक्षत्र, व्याघात योग तथा नागकरण में कोई भी शुभकार्य सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। साथ ही बुधवार, तृतीय प्रहर तथा मीन राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित रखें तथा इन दिनों एवं समय में शारीरिक सुरक्षा तथा स्वास्थ्य का भी उचित ध्यान रखें।

यदि आपके लिए समय शुभ न चल रहा हो मानसिक अशान्ति हो रही हो व्यापार में हानि अथवा नौकरी या पदोन्नति प्राप्ति में बाधा उत्पन्न हो रही हो तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट देव शंकर भगवान को नित्य विल्वपत्र चढाने चाहिए तथा सफेद मोती, सफेद वस्त्र, चावल इत्यादि पदार्थो का श्रद्धापूर्वक दान करना चाहिए एवं सोमवार के भी व्रत रखने चाहिए। इसके अतिरिक्त चन्द्रमा के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 10000 जप सम्पन्न करवाने चाहिए। इससे आपको मानसिक शान्ति प्राप्त होगी तथा लाभमार्ग भी प्रशस्त होंगे।

ऊँ श्रां श्रीं श्रों सः चन्द्रमसे नमः।
मंत्र- ऊँ ऐं क्लीं सोमाय नमः।